जयपुर श्री बीतक पारायण उत्सव

जो कोई देस कसाला तुमको, तुम भला चाहियो तिन ।
सरत धाम को न छोड़ियो, सूरत पीछे फिराओ जिन ।।

परम आदरणीय सुन्दरसाथ जी आज से लगभग ४०० वर्ष पूर्व इस कलयुग में सब ईश्वरों के ईश ब्रह्म अंगनाओं के धाम धनी अपनी अगनाओं को माया का खेल दिखाने के लिए उनको साथ लेकर जब इस संसार में प्रगट हुए तो उस जीव को (जो अनादिकाल से माया के ब्रह्माण्डों में सदा जन्मता और मरता रहता था जब तक कि महाप्रलय में चौदह लोक, पांच तत्व और तीनों गुणों का नाश नहीं हो जाता था) आकर इस आवागमन से मुक्त कर अखण्डता प्रदान की । ऐसा हम लोग अपने बड़ों से सुनते आते रहे हैं, श्री मुखवाणी, श्री बीतक साहब की चर्चा जयपुर में लगभग १४ साल से कई महापुरुष सुनाते चले आ रहे हैं । आज का युग साइंस का युग है बिना प्रमाण कोई बात सत्य की कसौटी पर खरी नहीं उतरती । आज वह युग नहीं रहा जब कोई भी बड़का अपनी संतान को अपनी तरह अन्धविश्वासता के रास्तों में पूर्णरूप से चला सके, इतिहास इसका साक्षी है कि ४०० साल पूर्व इस्लाम धर्म के शास्त्र श्री 'कुराने-पाक' को यदि कोई हिन्दू हाथ भी लगाता था तो सर कलम कर दिया जाता था वही आज खुद इस्लाम के मानने वालों ने ही उसका हिन्दी में टीका करवाकर सबको पढ़ने का निमंत्रण स्वयं ही दिया है इसी से हम समझ सकते हैं कि आज का युग प्रमाणों का युग है अन्धविश्वासता का नहीं । हमारे समाज के पूजनीय जब जब आकर हमें श्री बीअक साहब सुनाते थे तो कई बार मन में यह विचार उठते थे कि कौन सी ऐसी विशेषता प्रणामी धर्म में है जिस पर प्रणामी समाज गर्व करता है और मन्दिरों में ऐसे शब्द अक्सर लिखे मिलते थे कि 'श्री कृष्ण प्रणामी न पुर्नभवाय' इस बात पर मेरी कई महानुभावों से अक्सर वार्तालाप होती थी तो मुझे यही उत्तर मिलता था कि हम लोग श्री कृष्ण को केवल ११ साल ५२ दिन तक ही मानते हैं क्योंकि वह बालस्वरूप ही केवल पूर्ण ब्रह्म था, तो मैं उनसे कहा करता था यह तो

Nijanand App

और भी कई समाज वाले मानते हैं बाल-मुकुन्द की पूजा, रास के रचाने वाले श्रीकृष्ण बांके बिहारी जी भी कई और धर्म वाले मानते हैं तो यह लिखना कि कृष्ण प्रणामी न पुर्नभवाय कि केवल प्रणामी ही जो कृष्ण को मानते हैं आवागमन से छूट जाते हैं कहां तक न्यायसंगत है। कहने का तात्पर्य यह है कि ऐसी-ऐसी बहुत सी बातों की सन्तुष्टी न होने पर मन में असमंजस सी बनी ही रहती थी। लगभग ४-५ साल पहले की बात है उस समय मेरा श्री जगदीश जी से कोई खास परिचय नहीं था समाज के कई महानुभावों द्वारा तरह-तरह की बातें अक्सर सुनने को मिल जाती थीं। जब बार-बार किसी के प्रति किसी को भी अच्छी या बुरी बातें सुनने को मिलें तो उसे देखने की लालसा बढ़ना स्वाभाविक ही है तो एक बार श्री जगदीश जी अहमदाबाद से दिल्ली जा रहे थे तो एक मेरे मित्र द्वारा मुझे भी सूचना मिली, मन में मिलने की लालसा उठी और में भी उनके साथ स्टेशन गया यह उनसे मेरा पहला परिचय था तब उनसे जयपुर आने का आग्रह किया जो स्वीकार कर लिया गया फिर तो कई बार उनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस सन्दर्भ में चार साल पहले श्री जयचन्द जी गिरधर के यहां श्री बीतक साहब की समाप्ती पूजन पर जाने का अवसर मिला तो आठवें पहर की बीतक साहब सुनी तो दंग रह गया। क्या श्री बीतक साहब में ऐसा भी वर्णन है जैसा श्री जगदीश जी ने किया है। उस समय तो उनसे बात करने का अवसर न मिला परन्तु उसी साल जालंधर में पुन: यही प्रसंग सुनने को मिला यहीं पर पूज्य श्री महाराज जवाहरदास जी से भी भेंट हुई और वही आठवें पहर की बीतक साहब सुनकर मेरी आंखें भर आईं, मेरी क्या वहाँ पधारे सभी सुन्दरसाथ व स्वयं महाराज श्री की आंखों में आंसू देख कर में स्वयं अपना रोना न रोक सका और वहां से बाहर आ गया। उसी समय मैंने श्री जगदीश जी से कहा कि आप जयपुर में एक बार श्री बीतक साहब सुनाओ, तो उन्होंने आने की अनुमति तो दे दी लेकिन इस शर्त के साथ कि कार्यक्रम केवल मन्दिर में ही हो, तब मैंने आकर अपने मिलने वालों को राजी किया और मन्दिर में एक माह का यह प्रोग्राम तय किया, परन्तु हम लोग अपना दुर्भाग्य समझे या जयपुर के सुन्दरसाथ का कि हम लोग ज्यों ज्यों प्रयास करते गए कि श्री जगदीश जी द्वारा बीतक की चर्चा मन्दिर में हो, त्यों त्यों हमारे कुछ जयपुर के महापुरुष इस कार्य को न होने देने के लिए अपनी पूरी शक्ति का प्रयोग करते गए कई लोगों से इस विषय पर हमारी बात भी हुई कि क्या यह मन्दिर श्री राज जी की चर्चा वार्ता के लिए नहीं है ? तो यही जबाब मिलता कि बीतक

Nijanand App

साहब तो केवल श्रावण में ही होती है और उसके लिए हमारी पंचायत समय पर तय करेगी और जब समय आता तो तब हमें पुनः जवाब मिलता कि पंचायत ने पहले से बुक कर लिया था। ऐसा करते करते जब ४ साल बीत गए इस बीच हमने कई बार श्री जगदीश जी से भी प्रार्थना की कि वह हमें चर्चा सुनायें चाहे किसी घर पर प्रोग्राम रख लीजिए तो वह हम लोगों को यह समझाकर कि इससे सामाजिक खींचातानी बढ़ जाएगी चुप करा देते। परन्तु इस साल जब उनका प्रोग्राम अमृतसर में था तो मैंने पुनः उनसे प्रार्थना की कि हम १०-१२ लोग जो सुनने की इच्छा रखते हैं आपको आग्रह करते हैं कि आप हमारे यहां पर कार्यक्रम करने की अनुमति दीजिए क्योंकि हम सुनना भी जरूर चाहते हैं परन्तु इतना समय गृहस्थी में रहते हुए नहीं निकाल सकते कि आप जहां बीतक साहब की चर्चा कर रहे हैं वहां पूरा एक माह तक सुनें, इसलिए इस बार तो आपका दिल्ली का कार्यक्रम स्थगित करके हमारे यहां पर करने की अनुमति देनी ही पड़ेगी क्यों कि आप दिल्ली में भी तो श्री जयचन्द जी गिरधर के घर पर ही चर्चा करते हैं तो फिर हमारी आशाओं को क्यों पूरा नहीं करते। इस प्रकार बड़ी देर तक वार्तालाप के बाद उन्होंने जयपुर में हमारे यहां ७ जनवरी १९८० से ३ फरवरी १९८० तक की। श्री बीतक साहब की चर्चा सुनाने की अनुमति प्रदान की तब हम लोगों ने, मैं (श्री ओमप्रकाश भगत) व सतीशकुमार जी ने अमृतसर से आकर उन १०-१२ लोगों की एक मीटिंग बुलाई जिसमें सारा कार्यक्रम तय करना था। उस मीटिंग में सब कार्यक्रम तय किया गया तो सभी ने यह विचार किया कि एक बार पुनः श्री प्रनामी पंचायत जयपुर को एक प्रार्थना पत्र दिया जावे जिसमें श्री बीतक साहब की चर्चा मन्दिर प्रांगण में करने की अनुमति ली जावे ताकि इससे और सुन्दर साथ भी लाभ उठा सके परन्तु मैं दुख के साथ लिख रहा हूँ कि उनका उत्तर सुन मन भर गया जब उन्होंने यह कहा कि ऐसे कामों के लिए मन्दिर स्थान नहीं दिया जा सकता तब मेरे सहयोगियों ने तो बहुत कहा कि क्या मन्दिर स्थान किसी की जागीर होते हैं हमें वहीं जाकर प्रोग्राम करना चाहिए देखें कौन रोकता है परन्तु मुझे श्री जगदीश के यह शब्द याद रहते थे कि कोई भी ऐसा काम न करना जिससे किसी का मन दुखे या कोई विवाद हो और मैंने जो प्रोग्राम तय किया था उस पर अमल किया, इश्तहार छपवाए सारे मन्दिर स्थानों व सभी जगह के सुन्दर साथ को इस प्रोग्राम में शामिल होने का निमन्त्रण दिया हमने मकान की छत जो लगभग ८ कमरों की है को समतल करवाया और उसके

Nijanand App

आधे भाग में शाम्याने व कनातों द्वारा बन्द करवा दिया नीचे बैठने का बड़े बड़े गद्दे बिछवा दिये क्योंकि सरदी का समय और वह भी जनवरी की सरदी जो चर्म-सीमा पर रहती है इसलिए पूरा प्रबन्ध कर दिया गया। ६ जनवरी की रात्रि को साढ़े आठ बजे चेतक से श्री जगदीश जी व उनके साथ श्री प्रोफेसर प्रकाश जी, लाला जयचन्द जी पधारे, इससे पहले ५ तारीख को श्री कीकू भाई वकील व उनकी धर्म पत्नी अहमदाबाद से पधारे इस प्रकार ७ जनवरी १९८० को सुबह ८ बजे उस महान कार्यक्रम की शुरुवात हुई जिसकी प्रतीक्षा हम लोग पिछले ५-६ साल से कर रहे थे। इस शुरुवात पर जयपुर के श्री प्रेमदास जी तनेजा (भावी महाराज श्री करनाल) पधारे। उन्होंने इस कार्यक्रम की शुरुवात पर बहुत सुन्दर शब्दों द्वारा हमें उत्साहित किया। इस प्रकार श्री बीतक की शुरुवात ७ जनवरी को हुई जिसमें लगभग हम १०-१२ लोगों के अलावा ४०-५० स्त्री पुरुषों ने भाग लिया। सुबह तो केवल शुरुवात हो सकी परन्तु रात्री जब विषय शुरू हुआ तो जो बातें मैंने शुरू में लिखी हैं कि प्रणामी धर्म ही क्यों महान है इस पर ५ दिन और ५ रात्रि तक लगातार संसार के सारे ग्रन्थों से प्रमाण देकर जब बताया गया तो वह प्रश्न जो बार बार मस्तक को कुरेदते रहते थे की पूर्ण रूप सन्तुष्टी हुई। इसके अलावा जब पहली रात्रि को शिवपुराण के प्रमाणों से पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द परमात्मा की भी जानकारी मिली जिसे सारे विश्व के ग्रन्थ बता रहे थे कि कलयुग में बुद्ध निष्कलंक अवतार होगा (हिन्दुओं के शास्त्रों द्वारा) इमाम मेहदी ११वो सदी में आवेंगे कुरान द्वारा भी पूर्ण पहचान हुई वह सुन्दर साथ जिनको श्री जगदीश जी के प्रति भ्रान्ती थी और वह समझने लगे कि जगदीश जी गलत चर्चा करते हैं जब वह धीरे-२ आने लगे और जब उन लोगों ने आपके मुख से राज जी की वह अनुपम चर्चा सुनी तब उनका सारा भ्रम जाता रहा और उन सबका सिर खुद श्री जगदीश जी के मुख से चर्चा सुन झुकने लगा साथ ही फैलाए गए भ्रम का अन्धकार मिटता चला गया। लोग धीरे-२ दूसरे तीसरे दिन ही इतनी सख्या में आने लगे कि जो स्थान हमने आधा ही कवर किया था वह पूरा करना पड़ा फिर भी स्थान रात्रि को बैठने में कम पड़ जाता था, परन्तु लोगो के मन की भावना इतनी बढ़ती गई लोग सीढ़ियों तक जगह न मिलने पर खड़े खड़े ही डेढ़ दो घन्टे का कार्यक्रम सुनते रहे। जैसे जैसे बीतक साहब की चर्चा आगे बढ़ती गई। लोगों में प्रेम का सागर उमड़ पड़ा बाहर से भी लोग पधारने लगे। इस प्रकार चर्चा के आनन्द का वर्णन कितना बढ़ा में उन शब्दों में नहीं

Nijanand App

उनको विदा किया इस आशा पर कि ऐसी कृपा ऐसी बानी की वर्षा आप बार-बार करते रहें और हमको सुन्दर साथ द्वारा जो कुछ भ्रम में एक दूसरे से जुदा से पड़ गए हैं को एक प्रेम सूत्र में बांधते रहें, ऐसी आशा लेकर हम आपको अपनों से जुदा कर रहे सभी सुन्दर साथ के मुख पर एक ही शब्द बार बार सुना कि ऐसी शोभा, ऐसी चर्चा, ऐसा कार्यक्रम हमने अपने जीवन में पहली बार देखा था। इन्हीं शब्दों के साथ इस विषय को बन्द करते हुए मैं उन सभी सुन्दर साथ के चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम करता हूँ जिन्होंने इस प्रोग्राम में तन, मन और धन से पूरी पूरी सेवा की साथ ही श्री जगदीश जी के चरणों में भी कोटि कोटि प्रणाम कर प्रार्थना है कि वह सदा इसी प्रकार अपना प्रेम हमें प्रदान करते रहें।

चरण रज—

ओमप्रकाश भगत

—◡•◡—

प्यारे सुन्दर साथ से—

सर्व साधारण सुन्दर साथ को राष्ट्र-धर्म और समाज हित में अपने मन की बात साधारण भाषा में लिखने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करना भी हमारा लक्ष्य और उद्देश्य है। हमारा आप से अनुरोध है कि आप लिखना शुरू तो कीजिए हम आपके विचारों को आदर सहित उचित स्थान देने को तैयार हैं। समाज की ज्वलन्त समस्याओं पर आप प्रश्न भी भेज सकते हैं ट्रस्ट की इच्छा है कि "धाम-दर्शन" प्रणामी जगत का सशक्त और लोक-प्रिय समाचार पत्र बनें पर यह सब आपके सहयोग पर ही निर्भर है न!

—सम्पादक